नीपा
परिप्रेक्ष्य योजना

2020-2030

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान
17–बी, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली–110 016 (भारत)

नीपा
परिप्रेक्ष्य योजना

2020-2030

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान

17–बी, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली–110 016 (भारत)

© राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली, 2020
(मानित विश्वविद्यालय)

प्रथम संस्करणः मार्च 2020 (1टी)

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (नीपा) के लिए कुलसचिव, नीपा द्वारा प्रकाशित
17–बी, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली–110016, चित्र और कवर डिजाइन सुश्री विभूति आनंद (एनसीएसएल) और बचन सिंह द्वारा ले–आउट डिजाइन एवं विभा प्रेस प्रा.लि., ओखला में नीपा के प्रकाशन एकक द्वारा मुद्रित।

परिप्रेक्ष्य योजना 2020-30

ifjp;

विश्व तीव्र गति से बढ़ रहा है तथा दक्षिण के देश और भी अब धीरे–धीरे स्वयं को विकास की धुरी में परिवर्तित कर रहे हैं। यह विकास एक नया आयाम है। वैश्विक विकास की प्रकृति और स्वरूप को प्रभावित करने में भारत और चीन व्यापक तौर पर निर्णायक भूमिका निभा रहे हैं। इसके साथ, दुनिया असमान रूप से बढ़ रही है और असमानता विकसित उत्तर में तथा तीव्रता से बढ़ते दक्षिण में सबसे अधिक चर्चा का विषय बन गई है।

cnyrk of'od lanHkZ & f'k{kk dh Hkfedk

अनुभवजन्य साक्ष्य से अब यह स्थापित है कि शिक्षा विकास का एकमात्र महत्वपूर्ण स्रोत है। शिक्षा में अवसरों की समानता का अभाव, असमानता का स्रोत भी बन सकता है। इसलिए, शिक्षा की पहुंच और सफलता सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा योजना बनाना एक लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर समावेशी समाज एवम् विकास के हेतु एक आवश्यक शर्त बन गई है।

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (नीपा) के पास दुनिया में शैक्षिक नियोजन के लिए स्थापित पहले कुछ संस्थानों में से एक अनुभवजन्य संस्था होने के नाते, एक ऐसी शैक्षिक कार्यनीति विकसित करने का मार्ग प्रशस्त करने की प्रमुख जिम्मेदारी है– ऐसी नीति जो समावेशी और सुलभ हो। नीपा की भावी योजना की दृष्टि, मिशन और कार्यनीतिक दिशा–निर्देशों में समावेशी विकास और सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) दृढ़ता से निहित है। इसी तरह नीपा की कार्य योजना एवम् परिकल्पना में में राष्ट्रीय प्राथमिकताओं एवं विकसित वैश्विक संदर्भ के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) को निष्पादित करना निहित है। अर्तेव, नीपा सतत तरीके से समृद्धि के साझाकरण हेतु एक शिक्षा प्रणाली विकसित करने का प्रयास करेगा।

परिप्रेक्ष्य योजना के अंतर्गत, भविष्य के अभिविन्यास के संदर्भ में, निम्नलिखित परिकल्पनाएं की गई हैं: किन्हीं चिन्हित विषयों पर बड़े पैमाने एवम् बहु राज्य अनुभवमूलक अध्ययन; परास्नातक कार्यक्रम की शुरूआत; आमने–सामने होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों में घटाव; विस्तारित अंतर्राष्ट्रीय तंत्र और कार्य; पुस्तक, जर्नल लेख, सामयिक पत्र, नीति संक्षेप, और प्रशिक्षण मॉड्यूल जैसे संस्थागत प्रकाशनों की संख्या में बढ़ोत्तरी।

lLFkkxr lnHk

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (नीपा), जो एक मानित विश्वविद्यालय है, वह आधी सदी से भी अधिक समय से भारत में शैक्षिक नीति और नियोजन के क्षेत्र में एक चिंतक मंडल के रूप में कार्य कर रहा है। इस हेतु, नीपा भारत में शैक्षणिक चिन्तन एवम् नीति कार्यान्वयन की एक अग्रणी संस्था है। संस्थान द्वारा अनुसंधान प्रयोजित किए जाते हैं, डॉक्टरेट स्तर पर अध्ययन कार्यक्रम कराए जाते हैं, शैक्षिक योजनाकारों और प्रशासकों के लिए क्षमता विकास कार्यक्रम आयोजन किए जाते हैं और निर्णायक संस्थानों को नीति समर्थन प्रदान किया जाता है। यह मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी), भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित एक स्वायत्त विश्वविद्यालय है।

विश्वविद्यालय ने अपने लगभग छह दशकों के अस्तित्व में परिवर्तन के कई चरणों को देखा है। नीपा की शुरुआत 1962 से मानी जा सकती है जब इसे एशिया क्षेत्र के शैक्षिक योजनाकारों एवं प्रशासकों के प्रशिक्षण के लिए यूनेस्को के क्षेत्रीय केंद्र के रूप में स्थापित किया गया था। 1965 में इसका नाम बदलकर एशिया शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान कर दिया गया। 1973 में यह शैक्षिक योजनाकारों एवं प्रशासकों के लिए राष्ट्रीय स्टाफ़ महाविद्यालय बन गया और 1979 में जब अनुसंधान गतिविधियों को इसका केन्द्र बनाया गया तब इसका नाम नीपा रख दिया गया। 2006 में यह एक नए नाम – राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय (न्यूपा), के साथ एक विश्वविद्यालय बन गया,अनुसंधान अध्ययन कार्यक्रमों को प्रस्तावित करने लगा एवं एम.फिल. और डॉक्टरेट की डिग्री प्रदान करने लगा। 2017 में इसे अपना नाम नीपा पुनः मिल गया।

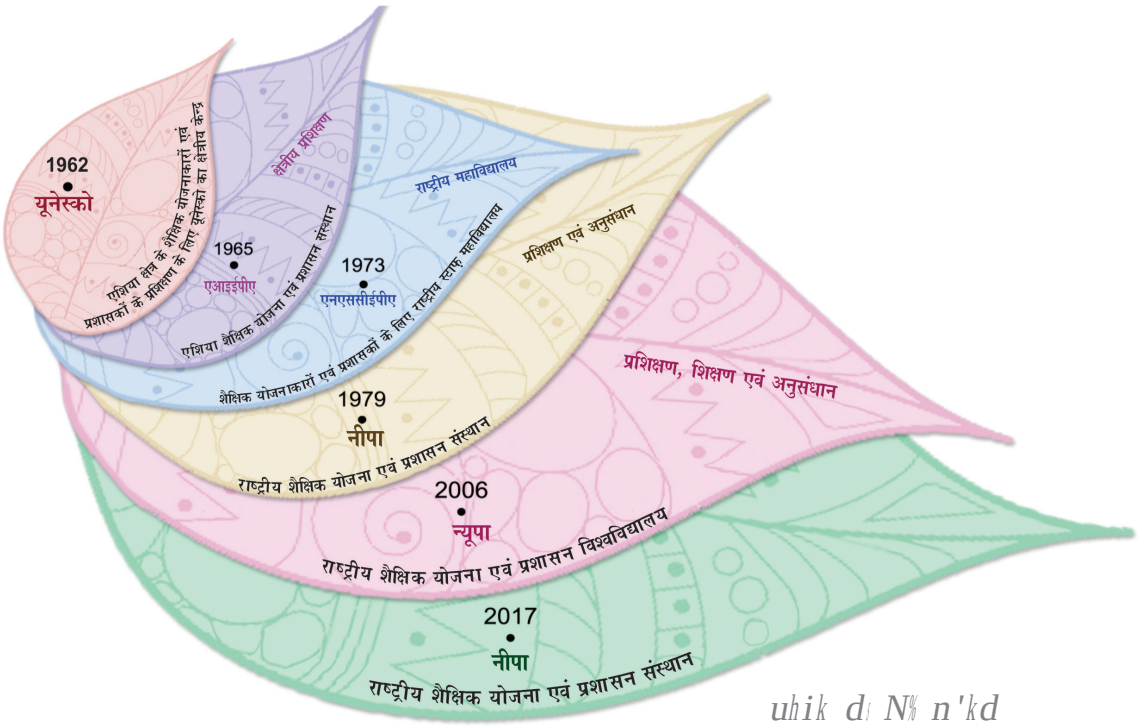

uhik d: N% n'kd

अपने प्रारंभिक चरणों में विश्वविद्यालय में हुए परिवर्तन, संस्थान के बदलते अभिविन्यास और स्वामित्व को दर्शाते हैं। यह अपने अस्तित्व के पहले दशक में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की सहायता प्राप्त एक क्षेत्रीय संस्थान रहा, बाद में यह एक राष्ट्रीय संस्थान बन गया और फिर इसने भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा हासिल किया। इसे मूलतः क्षेत्रीय एवं देश के शैक्षिक प्रशासकों के लिए प्रशिक्षण

संस्थान के रूप में स्थापित किया गया था। संस्थान के नीपा बनने पर अनुसंधान को इसके एक प्रमुख कार्य के रूप में जोड़ा गया और जब 2006 में यह विश्वविद्यालय बना, तब शिक्षण इसके प्रमुख कार्यों में से एक बन गया। आज नीपा अनुसंधान, शिक्षण और क्षमता विकास के क्षेत्र में व्यापक पहुंच के साथ एक अद्वितीय विश्वविद्यालय है, और भारत में नीति, योजना एवं शिक्षा के प्रबंधन में मुख्य भूमिका निभा रहा है।

विश्वविद्यालय निर्णयकर्ता संस्थाओं के साथ निकटता से काम करता है। विश्वविद्यालय की सफलता का प्रमुख कारण देश की शिक्षा नीति और नियोजन के क्षेत्र में दिया गया महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसने नियोजन के तरीकों के विकास में मुख्य भूमिका निभाई, राज्य एवम् संस्थागत स्तर पर शिक्षा परिचालन क्षमता प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए शिक्षागत नीति निर्माण और क्षमता विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। नीपा द्वारा निभाई गई प्रमुख भूमिकाओं के कुछ उदाहरण हैं, 1986 में शिक्षा नीति तैयार करने में दिया गया योगदान, 1993 में पंचायत राज में संवैधानिक विधेयकों और शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2010 का समर्थन, जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डीपीईपी) और राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आरएमएसए) के अंतर्गत पद्धति के विकास और विकेंद्रीकृत कार्यान्वयन में योगदान। जिला शिक्षा सूचना प्रणाली (डाईस) के माध्यम से बनाया गया डेटाबेस तथा नीपा द्वारा किए गए अनुभवजन्य अनुसंधान, शिक्षा में साक्ष्य आधारित निर्णय के लिए एक प्रमुख विश्वसनीय स्रोत रहा है।

नीपा अपने संकाय के कारण इन सफलताओं को प्राप्त करने में सक्षम हो सका है। इसके पास देश के सभी भागों से आए बहु–अनुशासनात्मक अभिविन्यास युक्त एक छोटा किन्तु उच्च विशेषज्ञ संकाय समूह है। योग्य संकाय सदस्यों के समृद्ध अनुभव ने राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित करने के लिए एक ठोस आधार प्रदान किया है, प्रभावी नीति समर्थन दिया है, योजनाओं का विकास किया एवं राष्ट्रीय और राज्य स्तरों पर योजनागत प्रक्रियाओं का नेतृत्व किया है।

विश्वविद्यालय के समक्ष चुनौतियों में निम्नलिखित शामिल हैं:

(क) यद्यपि नीपा अपने अधिदेश के कई ज्ञान क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, ऐसा लगता है हाल ही के वर्षों में यह पिछड़ने लगा है,

(ख) विश्वविद्यालय द्वारा प्रदर्शित अनुसंधान क्षमता, अनुसंधान और प्रकाशन में एक अंतर मौजूद है, और

(ग) प्रशिक्षण कार्यक्रमों के केन्द्र बिन्दु और लक्ष्य समूह के बीच संबंध कमजोर हो गए हैं

परिप्रेक्ष्य योजना तैयार करने का यह प्रयास विश्वविद्यालय को बदलते वैश्विक संदर्भ, राष्ट्रीय नीतियों और इसके व्यापक होते अधिदेश के आधार पर पुनः स्थापित करने का है। परिप्रेक्ष्य योजना विश्वविद्यालय के सामान्य ढांचे और एकीकृत दृष्टिकोण को मजबूत करके इसकी विभिन्न गतिविधियों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करती है। उम्मीद है कि यह परिप्रेक्ष्य योजना नीपा के प्रशिक्षण संस्थान से विश्वविद्यालय रूपांतरण को उसके मूल अधिदेश से समझौता किए बिना कारगर बनाने के लिए एक नई दिशा प्रदान करेगी। विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त अनुसंधान, शिक्षण और प्रशिक्षण संस्थान के रूप में विकसित करना एक चुनौती है ।

परिप्रेक्ष्य योजना का निर्माण एक अत्यधिक भागीदारीपूर्ण प्रक्रिया रही है। संकाय बैठकों में प्रारंभिक विचार पर चर्चा की गई जिससे निर्माण की प्रक्रिया आगे बढ़ी। प्रस्तावों पर सभी विभागों की विभागीय सलाहकार समिति की बैठकों में भाग ले रहे बाहरी सलाहकारों एवं नीपा के डॉक्टरेट छात्रों और प्रशासन के साथ चर्चा की गई। नीपा के भीतर हुई इन प्रारंभिक चर्चाओं के उपरांत, प्रस्तावों पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय के साथ चर्चा की गई थी, और उन्हें अध्ययन बोर्ड, अकादमिक परिषद और प्रबंधन बोर्ड के सामने प्रस्तुत किया,जिसके उपरांत, वित्त समिति को सूचना दी गई।

ifjç{; ;kstuk 2020&30

nf"V% अपने अधिदेश क्षेत्रों में ज्ञान की उन्नति के माध्यम से एक मानवीय और समावेशी शिक्षण समाज बनाने में योगदान देना।

nf"V

viu vf/kn'k {k=k e Kku dh mUufr d ek/;e l ,d ekuoh; vkj leko'kh f'k{k.k lekt cuku e ;xnku nukA

fe'ku% संस्थान का मिशन ये सभी प्रयास करने का है

- शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता का केंद्र बनना एवं एक चिंतक मंडल तैयार करना, साथ ही शैक्षिक नीति, योजना एवं प्रशासन जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर नेतृत्व करना;
- शिक्षा नीति, योजना और प्रबंधन के लिए पीढ़ी के अनुसंधानात्मक साक्ष्यों के विकास में योगदान देना;
- शैक्षिक प्रणाली और संरचना के सभी स्तर पर शैक्षिक शासन और प्रबंधन के लिए उत्तरदायी, सहभागी और जवाबदेह व्यवस्था के सृजन हेतु क्षमता को मजबूत करना;
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन और राष्ट्रीय और राज्य स्तरों पर शिक्षा के विकास के लिए योजना एवं संरचना कार्यक्रम तैयार करने में सहायता करना;
- शिक्षा नीति योजना और प्रबंधन, में अनुभवजन्य अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधानकर्त्ताओं की एक पीढ़ी विकसित करना, और
- भारत और विदेश में विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों का एक तंत्र तैयार करना।

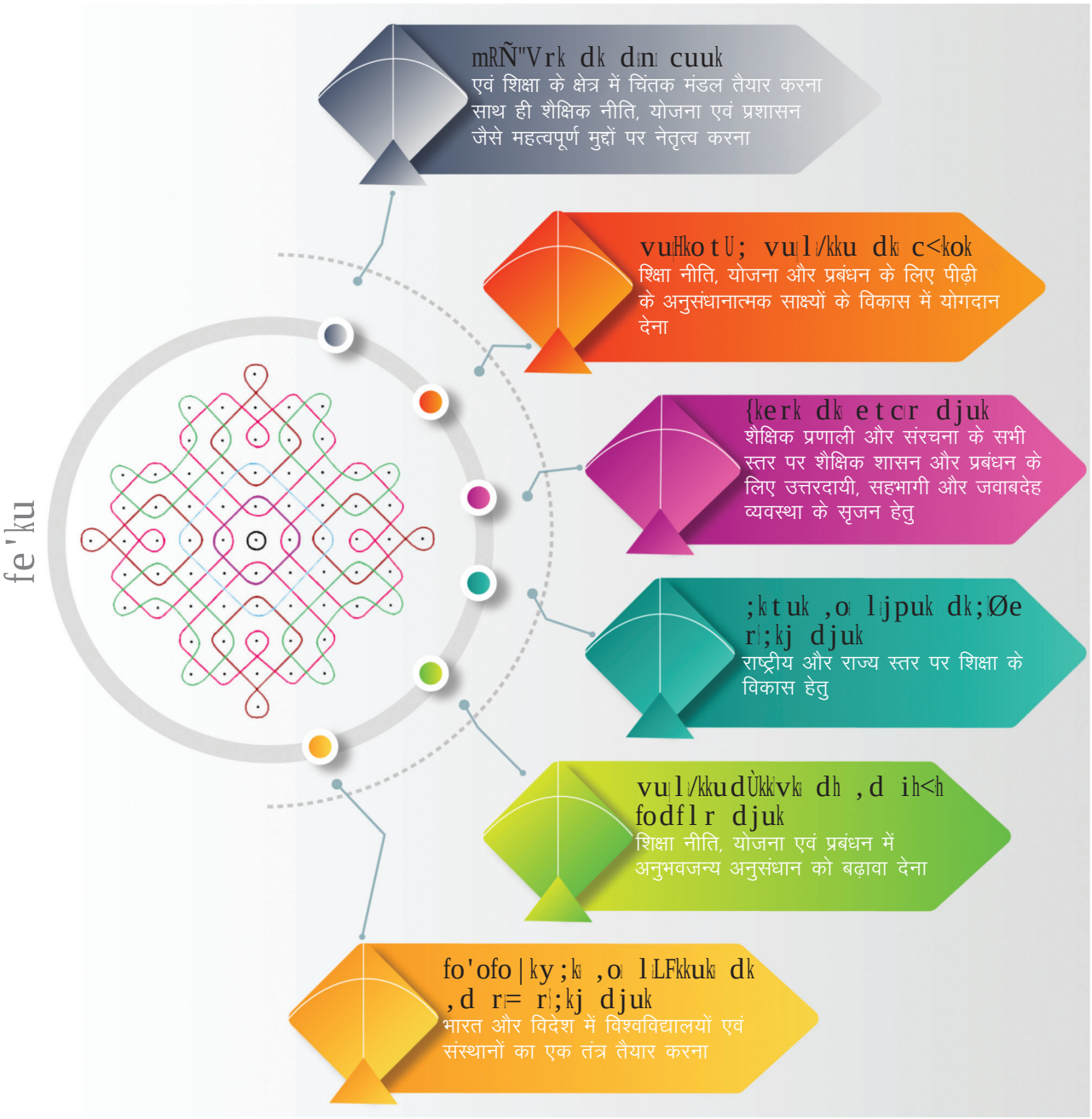

fe'ku

विश्वविद्यालय अपने अधिदेश क्षेत्रों के केंद्रबिंदु और अभिविन्यास में व्यापक परिवर्तन के साथ इन अभियानों को कार्यनीतिक हस्तक्षेपों के माध्यम से प्राप्त करने का प्रयास करना चाहता हैं, जिनका उदेश्य अनुसंधान कार्यक्रमों, शिक्षण, क्षमता विकास गतिविधियों में ऐसा ठोस बदलाव लाना है जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय और अन्य राष्ट्रीय और राज्य सम्बंधित नीति निर्धारण संस्थाओं को अपना समर्थन प्रदान कर सके।

ifjçs{; ;kstuk% ,d lkjka'k

dk;Zuhfrd mís';	lLFkkxr j.kuhfr	gLr{ksi dk rjhdk	fo"k;xr@egRo okys {ks=
1- f'k{kk ds {ks= esa lk{; vk/kkfjr fu.kZ; ysus dh {kerk dks c<kok nsuk	शैक्षिक योजना और प्रबंधन पर ज्ञान का निर्माण	अनुसंधान को बढ़ावा देना: बड़े पैमाने पर, बहु–राज्य अनुभविक अध्ययन	क) समानता, विविधता और समावेश ख) गुणवत्ता एवं सीखना और रोजगार परिणाम ग) प्रौद्योगिकी और शिक्षण अधिगम घ) प्रशासन, वित्तपोषण और जवाबदेही
2- jk"Vªh; vkSj jkT; Lrjksa ij f'k{kk dh ;kstuk vkSj çca/ku esa lq/kkj	क्षमता विकास के प्रयासों का विस्तार करना और गहरा बनाना	दीर्घकालिक और अल्पकालिक आमने–सामने प्रशिक्षण कार्यक्रम और ऑनलाइन कार्यक्रम	क) कार्यनीतिक योजना ख) परिणाम आधारित योजना ग) शैक्षिक नेतृत्व
3- 'kSf{kd ;kstuk vkSj çca/ku dh le> dks xgjk djuk	अनुसंधान और शिक्षण को जोड़ना	डॉक्टरल अध्ययन और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों को बढ़ावा देना	शैक्षिक योजना और प्रबंधन के सिद्धांत
4- Kku lk>kdj.k	प्रकाशन और नीति संवाद	पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेखों, सामयिक पत्रों, नीति संक्षेप और प्रशिक्षण मॉड्यूल के माध्यम से अनुसंधान के प्रसार को बढ़ावा देना	अनुसंधान और प्रशिक्षण के प्राथमिकता वाले क्षेत्र
5- jk"Vªh; vkSj varjkZ"Vªh; lLFkkuksa vkSj ,tsafl;ksa ds lkFk ra= dk fuekZ.k	शैक्षणिक समुदाय और नीति निर्माताओं के साथ बेहतर संवाद	एंट्रीप जैसे तंत्र का विस्तार, बुरुंडी में शैक्षिक योजना संस्थान को स्थापित करना, यूआईसी और सीआईई के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना	अंतर्राष्ट्रीय संबंध, राष्ट्रीय सहयोग और शिक्षा में क्षेत्रीय सहयोग

dk;ZuhfRd mís'; 1% f'k{kk dk {ks= esa lk{; vk/kkfjr fu.kZ; ysus dh {kerk dk c<kok nsuk

विश्वविद्यालय को एक अहम अकादमिक संस्थान के रूप में विश्वसनीयता दिलाने और अपने संकाय सदस्यों को अकादमिक पहचान दिलाना नीपा का एक महत्वपूर्ण और मुख्य कार्य होगा। नीपा के अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य सिद्धांत के द्वारा ज्ञान की नवीन पीढ़ी पर ध्यान केंद्रित करना होगा और देश की शिक्षा प्रणाली के प्रदर्शन में सुधार लाने हेतु शैक्षिक योजना और प्रबंधन का कार्य करना होगा। अनुभवजन्य अध्ययन यह भी इंगित करेगा कि जमीनी स्तर पर 'क्या काम करना है और क्या नहीं'।

परिप्रेक्ष्य योजना के अनुसंधान के प्रमुख सरोकार प्राथमिकता अनुसार निम्नलिखित हैं:

i. शिक्षा में असमानताएं एक महत्वपूर्ण अनुसंधान सरोकार है। भारत में शैक्षिक असमानताएं उच्च और लगातार बनी हुई हैं, और इनकी आर्थिक, क्षेत्रीय और सामाजिक जैसी बहुआयामी विशिष्टताएं हैं। भाषा, आस्था, जाति और लिंग के संदर्भ में विविधता, शिक्षा की असमानताओं को और बढ़ा देती हैं।

ii. शिक्षण संस्थानों में प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता व्यापक रूप से भिन्न होती है। शिक्षा की गुणवत्ता पर चर्चा को प्रावधानों से प्रक्रियाओं और परिणामों तक ले जाने की आवश्यकता है– शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया और सीखने के प्रतिफल एवं रोजगार परिणाम। नीपा द्वारा आयोजित अनुसंधान, शिक्षा प्रणाली से निकले स्नातकों की रोजगारशीलता और गुणवत्ता से संबंधित मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करेगा।

iii. प्रौद्योगिकी विश्व स्तर पर और भारत में शिक्षा के परिदृश्य को बदल रही है। यह सीधे तौर पर उन कार्यनीतियों को प्रभावित करती है जो शिक्षा की पहुंच, शिक्षण अधिगम की परिस्थितियों और शिक्षा में प्रक्रियाओं का विस्तार करने के लिए होती हैं, और सीखने के प्रतिफलों को प्रभावित करती हैं। प्रौद्योगिकी–सक्षम शिक्षा छात्रों को अधिगम के पारंपरिक तरीकों का वैकल्पिक मार्ग प्रदान करती है। नीपा द्वारा आयोजित अनुसंधान शिक्षा और शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं के संस्थागत ढांचे पर प्रौद्योगिकी के प्रभावों पर ध्यान केंद्रित करेगा।

iv. एक विविध और व्यापक प्रणाली में तुल्यता बनाए रखने के लिए सुशासन, पारदर्शिता और जवाबदेही आवश्यक है। पेशेवर स्वायत्तता के लिए जवाबदेही और सम्मान के बीच एक उचित संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता है। शासन सुधारों को संस्थागत प्रदर्शन में सुधार के लिए प्रक्रियाओं को मजबूत करने की आवश्यकता है।

संक्षेप में, भविष्य में नीपा द्वारा आयोजित अनुसंधान के प्राथमिकता वाले क्षेत्र निम्नानुसार हो सकते हैं:

क. समानता, विविधता और समावेश;

ख. गुणवत्तापूर्ण अधिगम और रोजगारयुक्त परिणाम;

ग. प्रौद्योगिकी और शिक्षण अधिगम, और

घ. शासन और जवाबदेही।

vu|l/kku çkFkfedrk,¡

अनुसंधान प्राथमिकताएं निम्न होंगीः जहाँ, नीपा के अनुसंधान को शेष प्रासंगिक नीति एवं योजना हेतु अपना अभिविन्यास जारी रखना चाहिये, वहीं संस्थान को मिलते आ रहे अकादमिक समुदाय के सम्मान को जारी रखने हेतु एक गहरी समझ और विश्लेषणात्मक दृढ़ता को भी इसे प्रतिबिंबित करना चाहिए। विश्वविद्यालय में हो रहे अनुसंधान को नीति–निर्माताओं द्वारा मूल्यांकित नीतिगत अध्ययनों और अकादमिक समुदाय द्वारा मूल्यांकित अनुभवजन्य और विश्लेषणात्मक अध्ययन के एक अच्छे मिश्रण को प्रतिबिंबित करना चाहिये। उपर्युक्त में, पहले के साथ जुड़ाव आवश्यक है, क्योंकि यह नीपा को प्रत्यक्ष रूप से कई सार्वजनिक नीतिगत मुद्दों को समझने का अवसर प्रदान करता है। इसके साथ ही नीपा की प्रशिक्षण संस्थान की छवि को एक विश्वसनीय और गंभीर अनुसंधान संगठन में बदलने के लिए उत्तरार्द्ध भी उतना ही महत्वपूर्ण है और आवश्यक है। अतः नीति–निर्माताओं के साथ बातचीत को मजबूत करने और विश्वविद्यालयी तंत्र, अनुसंधान संस्थानों और शैक्षणिक समुदायों के साथ हमारे नेटवर्क का विस्तार करने के लिए शोध को हमें एक माध्यम के रूप में देखना चाहिए।

अनुसंधान के उन्मुखीकरण से संबंधित एक और मुद्दा अनुसंधान का पैमाना है। विश्वविद्यालय को बड़े पैमाने पर अनेक राज्यों और हितधारकों को शामिल करने वाली अनुसंधान परियोजनाओं को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। इस तरह के अध्ययन अलग–अलग परिस्थितियों में अनुभवजन्य वास्तविकता को दर्शाते हैं और विश्वविद्यालय को अधिक सार्थक निष्कर्ष निकालने में सक्षम बनाते हैं जिसमें राष्ट्रीय स्तर की नीति और योजनागत निहितार्थ हो सकते हैं।

नीपा के अनुसंधान को एक अवसर और विश्वविद्यालयों एवं शैक्षणिक समुदाय के साथ अपने तंत्र का विस्तार करने के साधन के रूप में देखा जा सकता है।अनुसंधान के लिए बड़े पैमाने पर विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संगठनों से सहयोग की आवश्यकता होगी।सहयोगी संस्थानों और बड़े पैमाने पर शिक्षा क्षेत्र में अनुसंधान क्षमताओं का विकास भी विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों के साथ नीपा के अनुसंधान सहयोग के उद्देश्यों और योगदानों में से एक बनना चाहिए।

vuqlU/kku pØ

इन सभी प्रयासों का अर्थ है कि नीपा को राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर विश्वविद्यालयों और संस्थानों में अनुसंधानकर्ताओं के साथ विश्वासपूर्वक मिलाने के लिए आन्तरिक अनुसंधान क्षमताओं को विकसित करने की आवश्यकता है। अनुसंधान को विभिन्न प्रकाशनों – पुस्तकों, जर्नल लेखों, सामयिक पत्रों, नीति संक्षेपो के रूप में सामने आना चाहिए – जो क्षमता विकास और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए मॉड्यूल तैयार करने के लिए एक आधार प्रदान कर सके।

dk;Zuhfrd mís'; 2% jk"Vªh; vkSj jkT; Lrjksa ij f'k{kk d s ççca/ku vkSj ;kstuk e sa l/kkj

uhik dh Hkwfedk ¼jk"Vªh; vkSj jkT; Lrj½

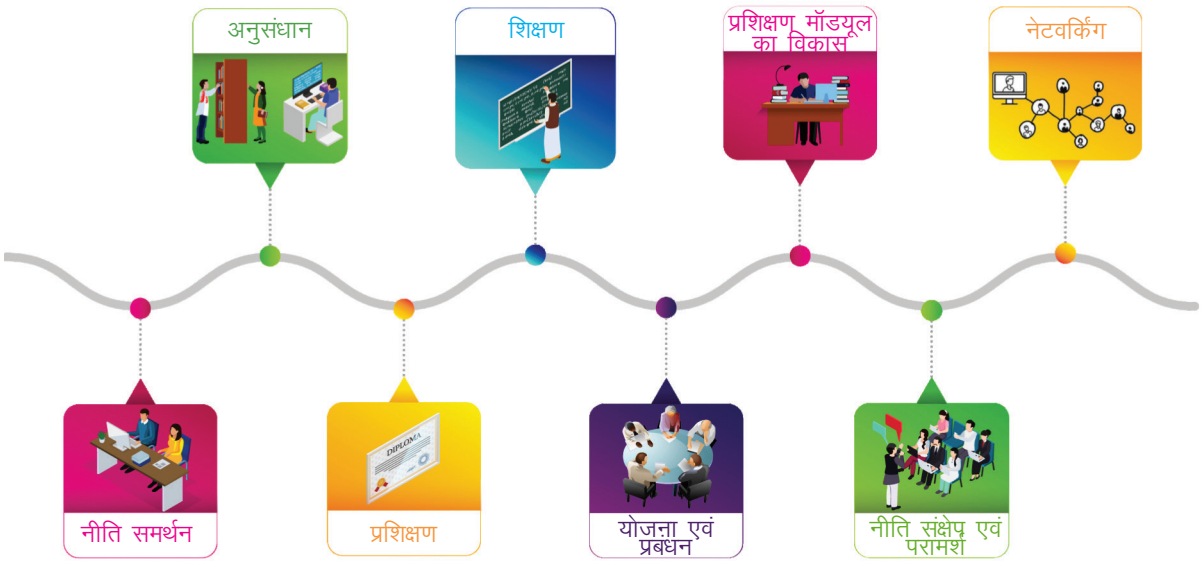

नीपा का प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संचालन का एक लंबा इतिहास है, जिसने संस्थान को शैक्षिक योजना और प्रबंधन के क्षेत्र में व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देने वाले एक अग्रणी संस्थान के रूप में पहचान और विश्वसनीयता प्रदान की है। वर्तमान में विश्वविद्यालय उप–राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। नीपा अल्प अवधि और दीर्घ अवधि दोनों प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है।

परिवर्तन की दिशा या विकल्प अनेक हो सकते हैं:

क) आमने–सामने और ऑनलाइन कार्यक्रमों में निवेश किए गए संकाय समय के बीच एक उचित संतुलन प्राप्त करें।

ख) अल्प अवधि के कार्यक्रमों के लिए लक्षित समूह वरिष्ठ अधिकारी और निर्णय निर्माता हो सकते हैं।

ग) विकेंद्रीकृत और स्थानीय स्तरों पर अधिकारियों को लक्षित करने वाले अल्प अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के एक महत्वपूर्ण हिस्से की जिम्मेदारी लेने के लिए राज्य स्तर के संस्थानों के साथ तंत्र निर्माण।

घ) आमने–सामने कराए जाने वाले कार्यक्रमों को दूरस्थ शिक्षा के साथ बदलें। आमने–सामने कराए जाने वाले कार्यक्रम सीमित संख्या में पदाधिकारियों को लक्षित करते हैं। यदि तकनीकी प्रगति पर भरोसा किया जाता है, तो विश्वविद्यालय बड़ी संख्या में प्रतिभागियों का नामांकन करने वाले कार्यक्रम शुरू कर सकता है और राष्ट्रव्यापी प्रभाव की क्षमता बढ़ा सकता है।

ड़) विश्वविद्यालय मिश्रित कार्यक्रमों की शुरुआत भी कर सकता है, जो ऑनलाइन और अनुशिक्षक आधारित मोड के साथ आमने–सामने कराए जाते हैं। विश्वविद्यालय को संसाधनों की अंतिम सीमा का इष्टतम अनुमान लगाने की आवश्यकता है।

च) दीर्घकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम, विशेष रूप से डेपा और आईडेपा को कठोर गुणवत्ता निरीक्षण क्रियाविधि के अधीन किया जाना चाहिए।

çf'k{k.k dk :ikrj.k

नीपा के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कमजोरियो में से एक प्रशिक्षण मॉड्यूल और सामग्री को विकसित करने के लिए पर्याप्त प्रयासों की कमी है। इसी तरह, अन्वेषक अध्ययन के माध्यम से दीर्घकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपयोगिता का आकलन करने की आवश्यकता है।इन दोनों को (प्रशिक्षण सामग्री और अन्वेषक अध्ययन) विश्वविद्यालय के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को मजबूत करने के प्रयासों का एक हिस्सा बनना चाहिए।

çf'k{k.k ea Hkkoh vfHkfoU;kl

- प्रशिक्षण मॉड्यूल का विकास करना
- ई–पाठ्यक्रमों की ओर बढ़ना
- आमने–सामने नीति परामर्श

नीपा को निम्न पर अधिक ध्यान केंद्रित करना होगाः क) संस्थागत स्तर पर नेतृत्व विकास; तथा ख) राज्य स्तरों पर योजना, प्रबंधन और जवाबदेही में सुधार करना

dk;Zuhfrd mís'; 3% 'kSf{kd ;kstuk vkSj çca/ku dh le> dks xgjkbZ çnku djuk

स्नातकोत्तर कार्यक्रमों को पढाया जाना एक हालिया घटना है जिसकी शुरुआत विश्वविद्यालय में एम.फिल. और डॉक्टरेट कार्यक्रमों के साथ की गई।विश्वविद्यालय के एम.फिल और पीएच.डी कार्यक्रमों को और मजबूत करने की आवश्यकता है।शिक्षण कार्यक्रम को मजबूत करने के लिए संकाय में सामाजिकता उत्पन्न करना और उन्हें उन्मुख करना जरूरी है जिससे एक गहरी सैद्धांतिक समझ और अनुसंधान अभिविन्यास विकसित किया जा सके क्योंकि यह पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षण प्रदान करने से अलग है। अनुसंधान छात्रों के मार्गदर्शन हेतु उच्च स्तरीय शैक्षणिक तैयारी, सैद्धांतिक समझ और कार्यविधिक सुपरिचित की आवश्यकता होती है जिससे थीसिस में चर्चा गुणवत्ता में वृद्धि हेतु अनुभवजन्य अध्ययनों एवं विश्लेषणात्मक दृढ़ता का मार्गदर्शन किया जा सके।

एक और मुद्दा जो विश्वविद्यालय में शिक्षण अधिगम और अकादमिक परस्पर क्रिया की प्रकृति को काफी प्रभावित करेगा, वह है एक स्नातकोत्तर पठन कार्यक्रम की शुरुआत। यह मुद्दा नीपा में लंबे समय से चर्चा में है। इसमें कोई संदेह नहीं है, कि एक स्नातकोत्तर पठन कार्यक्रम, शैक्षिक योजना और नीति पर सैद्धांतिक समझ को विस्तृत रूप से अवलोकन करने में मदद करेगा, और देश में इस क्षेत्र से संबंधित उपलब्ध पेशेवरों की संख्या में विस्तार करेगा। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की ओर से दौरे पर आए समूह ने भी नीपा में स्नातकोत्तर पठन कार्यक्रमों की शुरुआत के लिए सिफारिश की थी। हालांकि, एक स्नातकोत्तर पठन कार्यक्रम को चलाने के नाते से संस्थागत क्षमताएं (बुनियादी ढांचा,जगह, अकादमिक संकाय और प्रशासनिक सहायता) बहुत सीमित हैं। नीपा एक नई इमारत हेतु बजटीय समर्थन प्राप्त करने की प्रक्रिया में है। सभी बुनियादी प्रशासनिक औपचारिकताएं पूरी हो चुकी हैं। निकट भविष्य में नीपा में एक स्नातकोत्तर पठन कार्यक्रम शुरू किया जाएगा। नए भवन का निर्माण शुरू होते ही स्नातकोत्तर पठन कार्यक्रमों की तैयारी शुरू हो जाएगी।

dk;uhfrd mí'; 4% Kku dk çlkj

सार्वजनिक संस्था होने के नाते नीपा को सार्वजनिक रूप से अच्छे कार्यों के साथ और अधिक गहनता से जुटा होना चाहिए जिसमें ज्ञान का निर्माण और प्रसार शामिल हैं। संगोष्ठियों और नीतिगत संवादों में आमने–सामने की बातचीत के माध्यम से ज्ञान का प्रसार हो सकता है। हालांकि, और अधिक महत्वपूर्ण और स्थायी तंत्र प्रकाशनों के माध्यम से होना चाहिए।

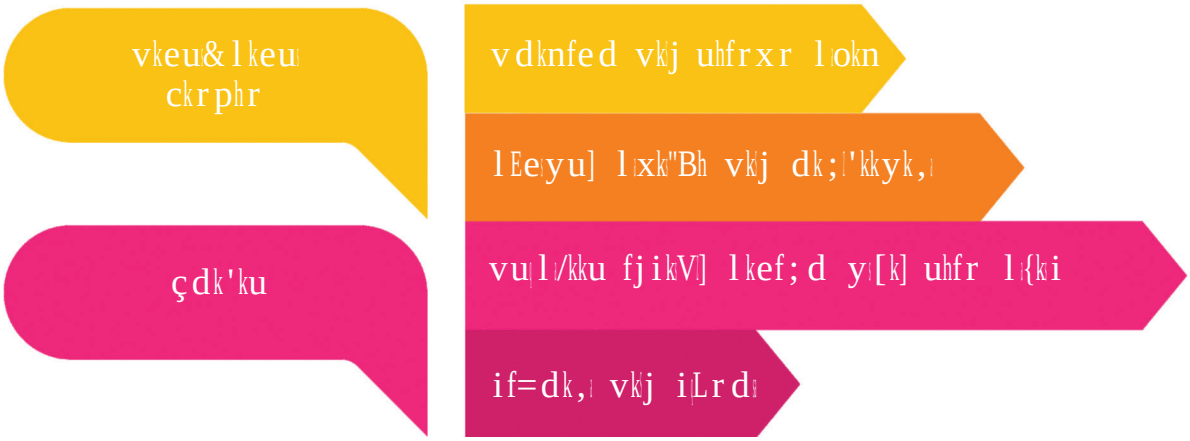

Kku dh lk>nkjh

नीपा से अकादमिक प्रकाशनों की संख्या अच्छी है, एवम् और बढ़ने की गुंजाइश है। सभी अनुसंधान गतिविधियों को अनुसंधान रिपोर्ट, सामयिक पत्र, नीति संक्षेप, पत्रिकाओं और पुस्तकों के माध्यम से प्रकाशित कराने का प्रयास करना चाहिए। इसके अलावा, अनुसंधान अध्ययनों के आधार पर प्रशिक्षण सामग्री के विकास पर जोर देने की आवश्यकता है।

प्रसार के कुछ अन्य स्थापित माध्यम हैं संगोष्ठी/सम्मेलन और कार्यशालाएं। नीपा के लिए आवश्यकता है कि वह बड़े पैमाने पर हो रहे अनुसंधान कार्यक्रमों को केंद्र में रखकर इस प्रकार की स्पर्धाओं को व्यवस्थित करता रहे। संस्थान को अनुसंधान निष्कर्षों का प्रसार करने, शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं के साथ बातचीत जारी रखने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियों के माध्यम से उपलब्ध अवसरों पर अधिक भरोसा करने की आवश्यकता है।

अपने काम की समीक्षा करने और अपने प्रकाशनों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए संकाय सदस्यों को निरंतर समर्थन प्रदान करने की आवश्यकता है। नीपा के कुछ प्रकाशन निम्नलिखित हैं:

- स्कूली शिक्षा पर एक विश्लेषणात्मक प्रकाशन– वार्षिक आधार पर
- उच्च शिक्षा पर एक वार्षिक प्रकाशन – भारतीय उच्च शिक्षा के प्रवृत्ति विश्लेषण के रूप में
- शिक्षा में नवाचारों पर एक वार्षिक प्रकाशन
- पत्रिकाएं– जर्नल ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन (जेपा) और परिप्रेक्ष्य
- सामयिक पेपर श्रृंखला, एंट्रीप न्यूज़लेटर
- नीति संक्षेप
- शिक्षा में नवाचारों पर प्रलेखन

नीपा को अपने अनुसंधान परिणाम के शिक्षण, प्रशिक्षण और प्रसार के लिए आधुनिक तकनीकों पर अधिक भरोसा करके अपनी पहुंच को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। ज्ञान वितरण के लिए प्रौद्योगिकी आधारित दूरस्थ मोड दुनिया भर में आम हो गए हैं। नीपा को प्रौद्योगिकी और प्रौद्योगिकी आधारित शैक्षिक प्रावधानों में इन उत्कर्षों का लाभ उठाने के लिए अपनी वितरण प्रणालियों को पुनर्गठित करने की आवश्यकता है।

नीपा को प्रौद्योगिकी द्वारा उपलब्ध कराई गई इन नई संभावनाओं के उपयोग के अवसरों की जांच करने की भी आवश्यकता है। नई प्रौद्योगिकी के प्रचार, कार्यक्रम आयोजित करने के नए तरीके और अनुसंधान परिणामों के प्रसार में सुधार करने हेतु तकनीकी आधार, नए तरीकों का पुनर्गठन, संकाय प्रशिक्षण के तरीकों के पुनर्गठन और एक नए प्रारूप में उनके कार्यक्रमों का संचालन करने हेतु पर्याप्त निवेश की आवश्यकता होगी ।

dk;Zuhfrd mís'; 5% jk"Vªh; vkSj varjk"Vªh; laLFkkuksa ,oa ,tsafl;ksa ds lkFk rky-esy dk fuekZ.k

नीपा को क्षेत्रीय संस्थान के रूप में स्थापित किया गया था और एशियाई क्षेत्र के एक प्रशिक्षण संस्थान के रूप में इसका संचालन शुरू किया गया था।

uVofd;x

1985 से ही संस्थान ने अपने अंतर्राष्ट्रीय इंटरफेस को बनाए रखा है– शैक्षिक योजना एवं प्रशासन में अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा (आईडेपा) कार्यक्रम इसका ही एक उदाहरण है।

हर साल 30 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागी इस कार्यक्रम में भाग लेते हैं। आईडेपा को और मजबूत करने की गुंजाइश है। इस दीर्घकालिक कार्यक्रम के अलावा, नीपा कई अल्प अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार भी आयोजित करता है।

1995 में आरम्भ होने के बाद से नीपा, शैक्षिक योजना में अनुसंधान संस्थान एवं प्रशिक्षण के एशियाई नेटवर्क (एएनटीआरआईईपी) के लिए सचिवालय के रूप में कार्य कर रहा है। एशिया के बाईस संस्थान इस नेटवर्क के सदस्य हैं। यह तंत्र संगोष्ठियों, सदस्य बैठकों का आयोजन करता है और एक द्विवार्षिक समाचार पत्रिका भी निकालता है।

नीपा विदेशों में स्थित विभिन्न संस्थानों के साथ अनुसंधान सहयोग कर चुका है। ये सहयोग संकाय विकास के लिए और नीपा की अकादमिक छवि में सुधार के लिए बहुत मददगार रहे हैं। इस मौजूदा सहयोग को और मजबूत करने एवं सहयोग के नए अवसरों को तलाशने की आवश्यकता है।

नीपा ने अपने द्वारा आयोजित किए गए विभिन्न अनुसंधान और प्रस्तावित प्रलेखनों के आधार पर सलाहकार और निगरानी भूमिका के माध्यम से मा.सं.वि. मंत्रालय और अन्य निर्णय लेने वाले निकायों के लिए शिक्षा में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से संबंधित मामलों पर समर्थन देने के उद्देश्य से 2019 में एक नई इकाई अंतर्राष्ट्रीय सहयोग (यूआईसी/नीपा) की स्थापना की।

विश्वविद्यालय एक नया केंद्र–अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा केंद्र (सीआईई/नीपा) स्थापित करने की प्रक्रिया में है, जो अनुभवजन्य साक्ष्य उत्पन्न करने के लिए एक विशेषज्ञ समूह और एक अनुसंधान निकाय के रूप में कार्य करेगा और भारत में उच्च शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देने के लिए कार्यनीतियों और परिचालन प्रथाओं को विकसित करने में मदद करेगा।

नीपा के अनेक संकाय सदस्य अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक योजना संस्थान (आईआईईपी/यूनेस्को), पेरिस और अन्य संस्थानों से प्रशिक्षित हैं। इसी तरह, उनमें से अनेक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेते हैं और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में व्यापक रूप से प्रकाशित होते हैं।

ifj.kke :ijs[kk

dk;Zuhfrd mís';	çn'kZu ladsrd
1- f'k{kk esa lk{; vkèkkfjr fu.kZ; ysus dh {kerk dks c<+kok nsuk	i) जारी और पूर्ण अनुसंधान परियोजनाओं के अंतर्गत आने वाले राज्यों की संख्या ii) प्रस्तुत अनुसंधान रिपोर्टों की संख्या
2- jk"Vªh; vkSj jkT; Lrjksa ij f'k{kk dh ;kstuk vkSj çcaèku esa lqèkkj	i) प्रशिक्षण दिनों की कुल संख्या ii) प्रशिक्षित अधिकारियों की कुल संख्या (आमने–सामने और ऑनलाइन) iii) प्रति संकाय प्रशिक्षण दिनों की औसत संख्या
3- 'kSf{kd ;kstuk vkSj çcaèku dh le> dks vkSj xgjk djuk	i) प्रति संकाय डॉक्टरल छात्रों की औसत संख्या का पर्यवेक्षण ii) शिक्षण दिनों की कुल संख्या iii) प्रति शिक्षक शिक्षण दिनों की औसत संख्या
4- Kku dk çlkj	i) विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की संख्या ii) प्रति संकाय लेख की औसत संख्या प्रकाशित iii) नीपा द्वारा प्रकाशित सामयिक पत्रों की संख्या iv) नीपा द्वारा प्रकाशित नीति संक्षेप की संख्या v) नीपा द्वारा तैयार किए गए प्रशिक्षण मॉड्यूल की संख्या
5. राष्ट्रीय,अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों और एजेंसियों के साथ तंत्र का निर्माण	i) आयोजित अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय बैठकों की कुल संख्या ii) नीपा संकाय द्वारा भाग लिए गए संगोष्ठियों/बैठकों की संख्या iii) तंत्र बैठकों के लिए नीपा द्वारा तैयार किए गए दस्तावेजों की संख्या

deZpkjh fodkl

विश्वविद्यालय को एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त अनुसंधान विश्वविद्यालय के रूप में विकसित करने हेतु विशिष्ट और अनुभवी संकाय सदस्यों की आवश्यकता है। संस्थान एवं संकाय सदस्यों को उनकी शैक्षणिक भूमिकाओं हेतु विकास कार्यक्रम तैयार करना एक नियोजित गतिविधि होगी, इसमें शिक्षण, अनुसंधान, प्रशासन, लेखन और व्यवसाय प्रबंधन शामिल हैं। संकाय विकास कार्यक्रमों द्वारा नीतिगत सोच एवम् अभ्यास में सुधार लाना होगा, परिवर्तन की ओर अग्रसर होना होगा और संगठनात्मक क्षमताओं और संस्कृति में अपना योगदान देना होगा।

संकाय विकास विश्वविद्यालय की वार्षिक गतिविधियों का एक अभिन्न अंग बनना चाहिए और यह संगठन के वार्षिक बजट में परिलक्षित होना चाहिए।

Hkfo"; dh vko';drk,

विश्वविद्यालय की गतिविधियों के विस्तार हेतु जगह की कमी एक गंभीर बाधा है। विश्वविद्यालय एक नई इमारत (रूपरेखा नीचे दी गई) के निर्माण की प्रक्रिया में है। इसके लिए सभी औपचारिकताओं को पूरा कर दिया गया है और सभी संबंधित एजेंसियों से मंजूरी मिल गई है। विश्वविद्यालय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा निधि आवंटन की प्रतीक्षा कर रहा है।

विश्वविद्यालय में ढांचागत सुविधाएं खराब हालत में हैं। नीपा को अपनी आधारभूत सुविधाओं, ई–लर्निंग और ई–गवर्नेंस सुविधाओं के उन्नयन के लिए बजटीय आवंटन नहीं मिल रहा है। विश्वविद्यालय को प्रस्तावित गतिविधियों में से अनेक को पूरा करने के लिए न्यूनतम मात्रा में अतिरिक्त संकाय/कार्मिकों की आवश्यकता होगी। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के साथ साझा की गई वित्तीय आवश्यकताओं का एक अनुमान बताता है कि परिप्रेक्ष्य योजना के कार्यान्वयन के लिए अतिरिक्त वार्षिक निवेश की भी आवश्यकता हो सकती है।

uhik dk çLrkfor u;k Hkou

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान
17–बी, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली–110 016 (भारत)
ईपीएबीएक्स नं. 91–011–26565600, 26544800 फैक्सः 91–011–26853041, 26865180
ई–मेलः niepa@niepa.ac.in Website: www.niepa.ac.in